संस्कृत-शिक्षा

भाग—३

लेखक—

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य,

एम. ए., डी. फिल्., पी. ई. एस. (अ० प्रा०)

कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय

ज्वालापुर (सहारनपुर)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

पंचम संस्करण ३००० प्रतियाँ
सन् १९८२ ई०

भारत सरकार द्वारा उपलब्ध किये गये रियायती मूल्य के कागज पर मुद्रित

नाम, Name..
कक्षा, Class.......................विभाग, Section................................
विद्यालय, School...

मुद्रक
शिव प्रेस,
ए. १०/२५ प्रह्लादघाट, वाराणसी

विषय-सूची

परिशिष्ट

संस्कृत-शिक्षा की विशेषताएँ

१. इसमें भाषा-शिक्षण की नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति अपनाई गई है तथा अत्यन्त सरल और रोचक ढंग से संस्कृत की शिक्षा दी गई है।

२. संस्कृत-शिक्षा ५ भागों में पूर्ण हुई है। यह कक्षा ६ से १० तक के छात्रों के लिए विशेष उपयोगी है। प्रत्येक कक्षा के लिए एक-एक भाग है।

३. प्रत्येक भाग में प्रयत्न किया गया है कि उस स्तर से संबद्ध व्याकरण का अंश उस भाग में विशेष रूप से सिखाया जाय।

४. अभ्यासों के द्वारा व्याकरण की शिक्षा दी गई है।

५. प्रारम्भिक छात्रों के लिए उपयोगी सभी बातें इसमें दी गई हैं।

६. प्रत्येक अभ्यास के लिए केवल दो पृष्ठ दिए गए हैं।

७. प्रत्येक अभ्यास में व्याकरण के एक या दो नियमों का अभ्यास कराया गया है। साथ ही आवश्यक शब्दावली भी दी गई है।

८. उदाहरण-वाक्यों के द्वारा व्याकरण के नियमों को स्पष्ट किया गया है। उनसे मिलते-जुलते हुए ही वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कराया गया है।

९. प्रत्येक अभ्यास में कुछ विशेष शब्दों, धातुओं या प्रत्ययों आदि का अभ्यास कराया गया है।

१०. परिशिष्ट में आवश्यक शब्दों और धातुओं के रूप दिए गए हैं।

कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

आवश्यक-निर्देश

१. संस्कृत में ३ लिंग (Genders) होते हैं। उनके नाम और संक्षिप्त रूप ये हैं :— १. पुंलिग (पुं०) (Masculine Gender), २. स्त्रीलिंग (स्त्री०) (Feminine Gender), ३. नपुंसकलिंग (नपुं०) (Neuter Gender)।

२. संस्कृत में ३ वचन (Numbers) होते हैं। उनके नाम और संक्षिप्त रूप ये हैं :— १. एकवचन (एक०) (Singular), २. द्विवचन (द्वि० या द्विव०) (Dual), ३. बहुवचन (बहु०) (Plural)।

३. संस्कृत में ३ पुरुष (Persons) होते हैं। उनके नाम और संक्षिप्त रूप ये हैं :— १. प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष (प्र० पु० या प्र०) (Third Person), २. मध्यमपुरुष (म० पु० या म०) (Second Person), ३. उत्तम पुरुष (उ० पु० या उ०) (First Person)।

४. संस्कृत में अधिक प्रयुक्त लकार (Tenses & Moods) ५ हैं। उनके नाम तथा अर्थ ये हैं :—१. लट् (वर्तमान काल) (Present Tense), २. लोट् (आज्ञा अर्थ) (Imperative Mood), ३ लङ् (भूतकाल) (Imperfect Tense), ४ विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ) (Potential Mood), ५. लृट् (भविष्यत् काल) (Future Tense)।

५. संस्कृत में ८ विभक्तियाँ (कारक) होती हैं। उनके नाम, संक्षिप्त रूप और चिह्न ये हैं :—

	विभक्ति	सं. रूप	कारक	चिह्न	Case
१.	प्रथमा	(प्र०)	कर्ता	—, ने	Nominative
२.	द्वितीया	(द्वि०)	कर्म	को	Accusative
३.	तृतीया	(तृ०)	करण	ने, से, द्वारा	Instrumental
४.	चतुर्थी	(च०)	संप्रदान	के लिए	Dative
५.	पचमी	(पं०)	अपादान	से	Ablative
६.	षष्ठी	(ष०)	संबन्ध	का, के, की	Genitive
७.	सप्तमी	(स०)	अधिकरण	में, पर	Locative
८.	संबोधन	(सं०)	संबोधन	हे, अये, भोः	Vocative

अभ्यास १

शब्दावली—उपाध्यायः—अध्यापक, teacher, शिष्यः—विद्यार्थी, student, सज्जनः—सज्जन, a gentle man, दुर्जनः—दुष्ट, a wicked person, प्रश्नः—प्रश्न, question, वृक्षः—पेड़, tree, प्रासादः—महल, palace, सेव्—सेवा करना, to serve, लभ्—पाना, to obtain, वृध्—बढ़ना, to prosper.

सेव्—लट्			आत्मनेपद	लट् के संक्षिप्त रूप		
सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र० पु०	अते	एते	अन्ते
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म० पु०	असे	एथे	अध्वे
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ० पु०	ए	आवहे	आमहे

सूचना—भ्वादिगण की आत्मनेपदी धातुओं में लट् में ये संक्षिप्त रूप लगेंगे।

नियम १—(प्रथमा) कर्त्ता (व्यक्तिनाम, वस्तुनाम आदि) में प्रथमा होती है। शिष्यः पठति। शिष्यः उपाध्यायं सेवते। सज्जनः वर्धते।

नियम २—(संबोधन) किसी को संबोधन करने (पुकारने) में संबोधन विभक्ति होती है। जैसे—हे राम !, हे कृष्ण !।

नियम ३—(प्रथम पु०) भवत् (आप) शब्द के साथ प्रथम पुरुष होता है। भवान् वर्धते—आप बढ़ते हैं। भवती सेवते—आप सेवा करती हैं।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

शिष्यः उपाध्यायं सेवते। त्वं सज्जनं सेवसे। भवान् सुखं लभते। अहं गुरुं सेवे। वयं सुखं लभामहे। हे शिष्य, किं त्वं जनकं सेवसे ? आम्, अहं जनकं सेवे। गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति। वृक्षे खगाः सन्ति। धनिकः प्रासादे निवसति।

संस्कृत बनाओ :—

वह गुरु की सेवा करता है ....

मैं पिता की सेवा करता हूँ ....

तू धन पाता है (लभ्) ....

हम सब सुख पाते हैं (लभ्) ....

सज्जन सदा बढ़ता है (वृध्) ....

दुर्जन दुःख पाता है (लभ्) ....

अध्यापक शिष्य से प्रश्न पूछता है ....

पेड़ पर पक्षी हैं ....

महल में धनिक रहते हैं ....

आप सुख पाते हैं (लभ्) ....

हे शिष्य, तू क्यों नहीं पढ़ता है ? ....

इन वाक्यों को शुद्ध करो :—

स गुरोः सेवति ....

वयं सुखं लभामः ....

गुरुः शिष्यात् प्रश्नं पृच्छसि ....

भवान् सुखं लभसे ....

लभ् और वृध् धातु के लट् (आ०) के रूप लिखो :—

लभते ....प्र० पु० वर्धते ....

..................म० पु० ....

..................उ० पु० ....

दिनाङ्क ....हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २

शब्दावली—अध्ययनम्—पढ़ना, to study, कार्यम्—काम, work, धनम्—धन, wealth, फलम्—फल, fruit, क्षेत्रम्—खेत, field, मुद्—प्रसन्न होना, to rejoice, सह्—सहन करना, to endure, याच्—माँगना, to beg,

सेव्—लोट्		आत्मनेपद		लोट् के संक्षिप्त रूप		
सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ०	ऐ	आवहै	आमहै

सूचना—भ्वादि० आत्मनेपदी धातुओं में लोट् में ये संक्षिप्तरूप लगेंगे।

नियम ४—(द्वितीया) कर्म कारक में द्वितीया होती है। पुस्तकं पठ। त्वं गुरुं सेवस्व। धनम् इच्छ। फलं भक्षय। सत्यं वद।

नियम ५—(द्वितीया) अभितः, उभयतः परितः, सर्वतः, प्रति, धिक् और विना के साथ द्वितीया होती है। ग्रामम् अभितः उभयतः वा क्षेत्राणि सन्ति—गाँव के दोनों ओर खेत हैं। विद्यालयं परितः सर्वतः वा पुष्पाणि सन्ति—विद्यालय के चारों ओर फूल हैं। ग्रामं प्रति गच्छति—गाँव की ओर जाता है। दुर्जनं धिक्। श्रमं विना न सुखम्।

नियम ६—सर्वनाम और विशेषण शब्दों का वही लिंग, विभक्ति और वचन होता है, जो विशेष्य का होता है। सः शिष्यः। सा छात्रा। तत् फलम्। एकं पुस्तकम्। तं बालकम्। सुन्दरं फलम्।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

अध्ययनं कुरु। कार्यं कुरु। धनम् इच्छ। फलं भक्षय। क्षेत्रे वृक्षाः सन्ति। त्वं मोदस्व। दुर्जनः दुःखं सहताम्। त्वं धनं न याचस्व।

संस्कृत बनाओ :—

शिष्य गुरु की सेवा करे ....

तू पिता की सेवा कर ....

सदा सत्य बोलो ....

गाँव के चारों ओर खेत हैं ....

विद्यालय के दोनों ओर फूल हैं ....

काम करो और सुख पाओ (लभ्) ....

फल खाओ और प्रसन्न होओ (मुद्) ....

दुर्जन दुःख सहे ....

तुम धन मत माँगो (याच्) ....

धन चाहो और बढ़ो (वृध्) ....

परिश्रम के बिना सुख नहीं है ....

रिक्त स्थानों में लोट् के रूप भरो :—

त्वं गुरुं .... (सेव्) । अहं सुखं .... (लभ्) ।

सज्जनः .... (वृध्) । त्वं .... (मुद्) ।

अहं धनं न .... (याच्) । दुर्जनः दुःखं .... (लभ्) ।

वयं जनकं .... (सेव्) । यूयं धनं .... (लभ्) ।

सह् और मुद् धातु के लोट् (आ०) के रूप लिखो :—

सहताम् .... प्र० मोदताम् ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास ३

शब्दावली —क्रीड—खेल, game, अजा—बकरी, she-goat, सुधा—अमृत, nectar, वसुधा पृथ्वी, earth, शिक्षा—शिक्षा, education, निशा—रात्रि, night, वृत्—होना, to be, कूर्द्—कूदना, to jump, शिक्ष्—सीखना, to learn, शुभ्—शोभित होना, to shine

नियम ७ (द्वितीया) गमन (चलना, जाना) अर्थ की धातुओं के साथ द्वितीया होती है। विद्यालयं गच्छति। गृहम् अगच्छत्।

नियम ८—(द्वितीया) अन्तरा और अन्तरेण के साथ द्वितीया होती है। गङ्गां यमुनां च अन्तरा प्रयागः अस्ति—गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है। परिश्रमम् अन्तरेण न सुखम्—परिश्रम के बिना सुख नहीं।

सेव्—लङ्		आत्मनेपद		संक्षिप्त रूप		
असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र०	अत	एताम्	अन्त
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ०	ए	आवहि	आमहि

सूचना—धातु से पहले 'अ' लगेगा। भ्वादि० आ० के लङ् में ये सं० रूप लगेंगे।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

रमा मातरम् असेवत। सुधा संस्कृतम् अशिक्षत। अजा क्षेत्रे अकूर्दत। उमायाः क्रीडां पश्य। देवा सुधाम् अपिबन्। वसुधायां जीवाः वसन्ति। भारती शिक्षाम् अलभत। निशायां चन्द्रः अशोभत। कः तत्र अवर्तत? सरला। अहम् अत्र वर्ते।

रमा शब्द के इन विभक्तियों में रूप लिखो :—

.... द्वि० .... च०

.... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ :—

बालिकाओं का खेल देखो ....

बकरी खेत में कूद रही है ....

देवों ने अमृत पिया ....

पृथ्वी पर मनुष्य रहते हैं ....

मैंने विद्यालय में शिक्षा पाई ....

रात में चन्द्र शोभित होता है ....

मैं यहाँ हूँ ....

तुम कहाँ हो ? ....

वहाँ कौन था ? ....

मैं आज विद्यालय गया था ....

गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है ....

विद्या के बिना सुख नहीं ....

कोष्ठ में दिए शब्दों में से उचित शब्द छाँटकर भरो :—

अजा क्षेत्रे .... (अकूर्दथाः, अकूर्दत) ।

अहं विद्यालये शिक्षाम् .... (अलभे, अलभत) ।

अहम् अत्र .... (वर्तते, वर्तसे, वर्ते) ।

तत्र कः .... (अवर्तथाः, अवर्तत) ।

वृत् और शिक्ष् (आ०) के लङ् के रूप लिखो : -

अवर्तत	प्र०	अशिक्षित ....
....	म०	....
....	उ०	....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास ४

शब्दावली—अग्निः—आग, fire, गिरिः—पहाड़, mountain, रविः—सूर्य, sun, यतिः—संन्यासी, an ascetic, ईक्ष्—देखना, to see, वन्द्—प्रणाम करना, to salute.

नियम ९—(द्वितीया) समय और स्थान की दूरी के वाचक शब्दों में द्वितीया होती है। पञ्च दिनानि पठति—पाँच दिन तक पढ़ता है। क्रोशं गच्छति – कोस भर जाता है।

नियम १०—(द्वितीया) इन धातुओं के साथ दो कर्म होते हैं :—दुह् (दुहना), याच् (माँगना), प्रच्छ् (पूछना), ब्रू (कहना), जि (जीतना), नी, हृ, कृष्, वह् (चारों का अर्थ है, ले जाना)। गां दुग्धं दोग्धि—गाय का दूध दुहता है। नृपं धनं याचते—राजा से धन माँगता है। गुरुं प्रश्नं पृच्छति। शिष्यं धर्मं ब्रवीति – शिष्य को धर्म बताता है। रामं शतं जयति —राम से सौ रुपए जीतता है। अजां ग्रामं नयति, हरति, कर्षति, वहति वा—बकरी को गाँव में जाता है।

सेव्—विधिलिङ्			आत्मनेपद	संक्षिप्त रूप		
सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्	प्र०	एत	एयाताम्	एरन्
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्	म०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि	उ०	एय	एवहि	एमहि

सूचना —भ्वादि० आ० के विधिलिङ् में ये संक्षिप्त रूप लगेंगे।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो : -

शिष्यः हरिं सेवेत। बालकः अग्निम् ईक्षेत। बालिकाः गिरिम् ईक्षेरन्। यतिः रविं वन्देत। वन्दे मातरम्। अहं जनकं मातरं च सेवेय।

संस्कृत बनाओ :—

बालिका आग को देखे ....

बालक पहाड़ को देखे ....

सूय आकाश में चमके (शुभ्) ....

यति ईश्वर को नमस्कार करे (वन्द्) ....

वह दस दिन तक पढ़ता है ....

वह कोस भर चलता है (चल्) ....

गोपाल गाय का दूध दुहता है ....

याचक राजा से धन माँगता है ....

शिष्य गुरु से प्रश्न पूछता है ....

गुरु शिष्य को धर्म बताता है ....

कृष्ण राम से सौ रु० जीतता है ....

रमेश बकरी को गाँव में ले जाता है ....

इन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दो :—

शिष्यः कं सेवेत ? ....

बालकः कम् ईक्षेत ? ....

कः ग्रामम् अजां नयति ? ....

क शिष्यं धर्मं ब्रवीति ? ....

ईक्ष् और वन्द् धातु (आ०) के विधिलिङ् के रूप लिखो :—

ईक्षेत .... प्र० वन्देत ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास ५

शब्दावली—शिशुः—बच्चा, an infant, शत्रुः—शत्रु, enemy, पशुः—जानवर, animal, तरुः—वृक्ष, tree, भाष्—कहना, to tell, यत्—यत्न करना, to try, कम्प्—काँपना, to tremble.

नियम ११ (तृतीया) करण कारक में तृतीया होती है और कर्मवाच्य या भाववाच्य में कर्ता में। कन्दुकेन क्रीडति। दण्डेन गच्छति। लेखन्या लिखति। रामेण भोजनं खादितम्—राम ने खाना खाया।

नियम १२—(तृतीया) साथ अर्थ वाले सह, साकम्, सार्धम् के साथ तृतीया होती है। जनकेन सह, साकं सार्धं वा गृहं गच्छति।

सेव्—लृट्		आत्मनेपद		संक्षिप्त रूप		
सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र०	इष्यते	इष्येते	इष्यन्ते
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म०	इष्यसे	इष्येथे	इष्यध्वे
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ०	इष्ये	इष्यावहे	इष्यामहे

सूचना—(१) कुछ धातुओं में इष्यते वाले रूप लगते हैं और कुछ में स्यते स्येते आदि बिना इ वाले रूप लगते हैं। (२) भ्वादि० आत्मने० के लृट् में ये संक्षिप्त रूप लगते हैं। (३) इन धातुओं के लृट् प्र० पु० एक० में ये रूप बनते हैं। सं० रूप लगाकर रूप बनावें। वृध्—वर्धिष्यते, मुद्—मोदिष्यते, सह्—सहिष्यते, याच्—याचिष्यते, वृत्—वर्तिष्यते, कूर्द्—कूर्दिष्यते, शिक्ष्—शिक्षिष्यते, लभ्—लप्स्यते, भाष्—भाषिष्यते।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

शिशुः मोदिष्यते। शत्रुः कम्पिष्यते। पशुः कूर्दिष्यते। छात्रः यतिष्यते। तरुः वर्धिष्यते। गुरुः भाषिष्यते। शत्रुः दुःखं सहिष्यते। अहं धनं लप्स्ये।

संस्कृत बनाओ :—

शिशु धन पाएगा ....

शत्रु दुःख सहेगा ....

पशु खेत में कूदेगा ....

वृक्ष वेग से काँपेगा ....

गुरु सत्य कहेगा ....

शिष्य यत्न करेगा ....

राम गेंद से खेलेगा ....

वह कलम से लिखेगा ....

क्या राम ने खाना खाया ? ....

बालक पिता के साथ घर गया ....

शिष्य गुरु की सेवा करेगा ....

मैं संस्कृत लिखूँगा ....

इन वाक्यों को शुद्ध करो :—

शिशुः धनं लभिष्यते ....

गुरुः सत्यं भाषिष्यति ....

स लेखन्या लिखिष्यति ....

अहं संस्कृतं शिक्षिष्यामि ....

भाष् और यत् धातु (आ०) के लृट् के रूप लिखो :—

भाषिष्यते .... प्र० यतिष्यते ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास ६

शब्दावली--कर्तृ--करने वाला, doer, हर्तृ—चुराने वाला, thief, वक्तृ—बोलने वाला, speaker, अध्येतृ—विद्यार्थी, student, द्रष्टृ—दर्शक, spectator, त्वदीयः—तेरा, your, मदीयः--मेरा, mine, स्वकीयः--अपना, own, परकीयः—पराया, of others, भवदीयः--आपका, your, लभ्--पाना, to obtain.

नियम १३—(तृतीया) किम्, किं कार्यम्, कः अर्थः, किं प्रयोजनम् (क्या लाभ) के साथ तृतीया होती है। दुर्जनेन पुत्रेण किं, किं कार्यम् कोऽर्थः, किंप्रयोजनम् (दुर्जन पुत्र से क्या लाभ)।

नियम १४--(तृतीया) अलम् (बस, मत) के साथ तृतीया होती है। अलं विवादेन-झगड़ा मत करो। अलं हसितेन--मत हँसो।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :--

संसारस्य कर्ता ईश्वरः अस्ति। पुस्तकस्य हर्ता दुःखं लभते। अध्येता सुखम् अलभत। वक्ता अभाषत। द्रष्टा क्रीडाम् ईक्षते। एतानि त्वदीयानि पुस्तकानि सन्ति, इमानि च मदीयानि। स्वकीयं पाठं पठ। परकीयं वस्तु न चोरय। अहं भवदीयः सखा अस्मि।

कर्तृ (पुं०) शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो: --

.... प्र० .... द्वि०

.... तृ० .... च०

.... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ :—

इस संसार का कर्ता ईश्वर है ....

धन का हर्ता दुःख पाता है..

वक्ता आदर को पाता है..

पढ़ने वाले सदा सुख पाते हैं..

दर्शक खेल देखते हैं ....

ये तेरी पुस्तकें हैं ....

वे मेरी पुस्तकें हैं ....

अपनी पुस्तकें वहाँ लाओ ....

पराया धन न चुराओ..

आपका मित्र द्वार पर है..

दुर्जन शिष्य से क्या लाभ ?..

झगड़ा मत करो..

रिक्त स्थानों को भरो :—

..............................सुखं लभते । द्रष्टारः क्रीडाम् .... ।

..............................दुःखम् अलभत । वक्तारः आदरम् .... ।

अहं .... मित्रम् अस्मि । स्वकीयं पुस्तकम् अत्र.............................. ।

मूर्खेण पुत्रेण.............................. । अलं .... ।

लभ् (आ०) धातु के लोट् और लङ् के रूप लिखो :—

लभताम्.............................. प्र० अलभत ....

.... म०..............................

..............................उ०..............................

दिनाङ्क.............................. हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य..............................

अभ्यास ७

शब्दावली—भगवत्—भगवान्, God, श्रीमत्—श्रीमान्, Sir, wealthy, गुणवत्—गुणवान्, virtuous, बुद्धिमत्—बुद्धिमान्, wise, श्वेतः—सफेद, white, कृष्णः—काला, black, हरितः—हरा, green, नीलः—नीला, blue, रक्तः—लाल, red, पीतः—पीला, yellow, वृध्—बढ़ना, to prosper, to increase.

नियम १५—(तृतीया) अंग-विकार होने पर विकृत अग में तृतीया होती है। नेत्रेण काणः—एक आँख से काना। कर्णेन बधिरः कान से बहरा।

नियम १६—(तृतीया) प्रकृति आदि क्रिया-विशेषण शब्दों में तृतीया होती है। प्रकृत्या साधुः स्वभाव से सज्जन। सुखेन जीवति—सुख से जीता है। दुःखेन विद्यां लभते—दुःख से विद्या पाता है।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

भगवन्तं भज। श्रीमते नमः। गुणवन्तः सदा वर्धन्ते। बुद्धिमतां कीर्तिः वर्धते। इदं वस्त्रं श्वेतं वर्तते, तत् च कृष्णम्ः रमायाः शाटिका हरिता वर्तते, सुशीलायाः च नीला। एतस्य पुस्तकस्य मुखपृष्ठं रक्तं वर्तते, तस्य च पीतम्।

हिन्दी में अर्थ लिखो :—

बुद्धिमतः यशः अवर्धत..

गुणवन्तः स्वगुणैः कीर्तिं लभन्ते..

दुर्जनेन शिष्येण को लाभः..

नरः दुःखेन विद्यां लभतेः..

संस्कृत बनाओ :—

श्रीमान् लोग सदा सुख पाते हैं..

गुणवान् का सर्वत्र आदर होता हैं..

बुद्धिमान् की कीर्ति सदा बढ़ती है..

भगवान् को भजो..

राम का वस्त्र पीला है..

रमा की साड़ी नीली है..

मेरी पुस्तक का मुखपृष्ठ हरा है..

सुशीला की साड़ी काली है..

बन्दर का मुँह लाल होता है..

कौवा आँख से काना है..

सेवक कान से बहरा है..

राम स्वभाव से सज्जन है..

कोष्ठ में दिए शब्दों में से उचित शब्द छाँट कर भरो :—

बुद्धिमन्तः बुद्ध्या..................................। (अवर्धत, अवर्धन्त)

गुणवन्तः गुणैः..................................। (वर्धेयुः वर्धेरन्)

अहं.................................. मित्रम् अस्मि। (भवदीयः, भवदीयम्)

अध्येतारः शीलेन..................................। (वर्धते, वर्धन्ते)

वृध् धातु के लट् और विधिलिङ् में रूप लिखो :—

वर्धते.................................. प्र० वर्धेत ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क.................................. हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य..................................

अभ्यास ८

शब्दावली– गच्छत्– जाता हुआ, going, पठत्—पढ़ता हुआ, studying, लिखत् -लिखता हुआ, writing, हसत्—हँसता हुआ, laughing, पिबत् – पीता हुआ, drinking, खादत्—खाता हुआ, eating, उच्चः—ऊँचा, high, नीचः—नीचा' low, दीर्घः—लम्बा, long, लघुः—छोटा, small, मुद् – प्रसन्न होना, to rejoice.

नियम १७—(चतुर्थी) संप्रदान कारक (दान देना आदि) में चतुर्थी होती है। ब्राह्मणाय धनं ददादि। बालकाय मोदकं यच्छति।

नियम १८ - (चतुर्थी) नमः और स्वस्ति के साथ चतुर्थी होती है। गुरवे नमः। पित्रे नमः। शिष्याय स्वस्ति। पुत्राय स्वस्ति।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

गच्छन्तं सिंह पश्य। पठते बालकाय मोदकं यच्छ। लिखते शिष्याय फलं देहि। छात्राः धावन्ति। बालकाः जलं पिबन्तः तिष्ठन्ति। भोजनं खादतां नराणां समूहः अत्र वर्तते। इदं गृहम् उच्चं वर्तते, तत् च नीचम्। तत् वस्त्रं दीर्घं वर्तते, इदं च लघु। छात्राः हर्षेण मोदन्ते। बालिकाः अमोदन्त।

गच्छत् शब्द (पुं०) के इन विभक्तियों में रूप लिखो :—

गच्छन्..प्र० ....द्वि०

....च० ....पं०

....ष० ....स०

संस्कृत बनाओ :—

जाते हुए व्याघ्र को देखो ....

पढ़ते हुए छात्र को फल दो ....

लिखते हुए बालक को पुस्तक दो ....

हँसते हुए बालक की वह पुस्तक है ....

बालक फल खाते हुए खड़े हैं ....

जल पीते हुए जनों का समूह वहाँ है ....

इन बालकों को लड्डू दो ....

उन छात्रों को फल दो ....

गुरु को नमस्कार ....

शिष्य को आशीर्वाद ....

पिता को नमस्कार ....

वह मकान ऊँचा है ....

इन प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दो :—

तव वस्त्रं कीदृशं वर्तते ? ....

त्वं कस्यां कक्षायां पठसि ? ....

किं त्वं प्रतिदिनं व्यायाम करोषि ? ....

किं त्वं प्रतिदिनं स्वपाठं स्मरसि ? ....

मुद् धातु के लोट् और लृट् के रूप लिखो —

मोदताम् .... प्र० मोदिष्यते ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १०

शब्दावली—पथिन्—मार्ग, way, उष्णम्—गर्म, hot, शीतलम्—ठंडा, cold, कोमलम्—कोमल, soft, तीक्ष्णम्—तीखा, तेज, sharp, समीचीनम्—अच्छा, good, शोभनम्—अच्छा, good, याच्—माँगना, to beg,

नियम २१—(चतुर्थी) क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना) और असूय (दोष निकालना) अर्थ की धातुओं के साथ जिस पर क्रोध किया जाय, उसमें चतुर्थी होती है। रामः दुर्जनाय (दुर्जन पर), क्रुध्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति।

नियम २२—(क्तवतु प्रत्यय) भूतकाल अर्थ में धातु से क्तवतु प्रत्यय होता है। इसका तवत् शेष रहता है। क्त प्रत्यय लगाकर जो रूप बनता है, उसमें बाद में 'वत्' और जोड़ देने से तवत् प्रत्यय वाला रूप बनता है। तवत् प्रत्यय कर्तृवाच्य में होता है, अतः तवत्—प्रत्ययान्त के लिंग, विभक्ति और वचन कर्ता के तुल्य ही होंगे। कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया, क्रिया कर्ता के तुल्य। तवत्—प्रत्ययान्त के रूप पुं० में भगवत् के तुल्य, स्त्री० में ई लगाकर नदी के तुल्य और नपुं० में जगत् के तुल्य। जैसे—ते पुस्तकानि पठितवन्तः। स कार्यं कृतवान्। बालिकाः ग्रामं गतवत्यः।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

नृपः चौराय क्रुध्यति। स लेखं लिखितवान्। बालिका लेखं लिखितवती। शिष्यः पुस्तकं पठितवान्। पत्रं पतितवत्। शोभनेन पथा गच्छ। उष्णं भोजनं भक्षय। शीतलं जलं पिब। मधुरं कोमलं च वद, तीक्ष्णं कदापि न वद। निर्धनः धनिनं धनम् अयाचत।

संस्कृत बनाओ :—

राजा दुर्जन पर क्रोध करता है..

गुरु शिष्य पर क्रोध करता है..

यह अच्छा मार्ग है..

अच्छे मार्ग से चलो..

उसने गर्म खाना खाया..

उसने ठंडा पानी पिया..

पुष्प का पत्र कोमल है..

तीक्ष्ण वचन न कहो..

सदा अच्छा कार्य करो..

निर्धन धनी से धन माँगता है..

बालकों ने पुस्तकें पढ़ीं..

बालिकाओं ने लेख लिखा..

रिक्त स्थानों को भरो :—

निर्धनः.................... धनम् अयाचत । .... धनं याचते ।

भिक्षुकः नृपं .... । अहं कृपणं धनं न .... ।

बालका ग्रामं .... । सा कार्यं .... ।

ते पुस्तकानि .... । शिष्यः लेखं .... ।

याच् धातु (आ०) के विधिलिङ् और लृट् में रूप लिखो : –

याचेत.................... प्र० याचिष्यते....................

.... म०....................

.... उ०....................

दिनाङ्क.................... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य....................

अभ्यास ११

शब्दावली—नदी—नदी, river, सुलेखः—सुलेख, good-hand writing, श्रुतलेखः—इमला, dictation, परिणामः—परिणाम, result, परीक्षा-परीक्षा, examination, अवकाशः—छुट्टी, holiday, अनुशासनम्—अनुशासन, discipline, नी—ले जाना, to carry.

नियम २३—(चतुर्थी) कथ् (कहना) और निवेदय (निवेदन करना) धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। शिष्याय कथयति शिष्य से कहता है। गुरवे निवेदयति—गुरु से निवेदन करता है।

नियम २४—(शतृ प्रत्यय) 'रहा है', 'रहा था' आदि 'रहा' वाले अर्थ को बताने के लिए शतृ प्रत्यय होता है। शतृ का अत् शेष रहता है। यह परस्मैपदी धातु के लट् के स्थान पर होता है। धातु के लट् प्र० पु० बहुवचन के रूप में से अन्तिम इ और बीच के न् को हटाने से शतृ-प्रत्यय वाला रूप शेष रहता है। इसके रूप पुं० में गच्छत् के तुल्य, स्त्री० में ई लगाकर नदीवत् और नपुं० में जगत् के तुल्य। जैसे—गम्—गच्छत्, पठ्—पठत् लिख्—लिखत्, कृ—कुर्वत्, पा (१)—पिबत्, दृश्—पश्यत्।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :-

नदी वहति। नद्यां स्नानं कुरु। नद्याः जलं स्वच्छं वर्तते। सुलेखं लिख। शुद्धं श्रुतलेखं लिख। मम परीक्षायाः परिणामः शोभनः वर्तते। अद्य अवकाशः अस्ति। अनुशासनं पालय। शिष्यः पशुं गृहम् अनयत्। गच्छन्तं सिंह पश्य। पठते लिखते च बालकाय फलं यच्छ।

नदी शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :--

....प्र० ....द्वि०

....ष० ....स०

संस्कृत बनाओ :—

नदी का जल स्वच्छ है..

नदी में प्रतिदिन स्नान करो..

नदी बह रही है..

सदा सुलेख लिखो..

शुद्ध इमला लिखो..

मेरी परीक्षा कल है..

मेरा परीक्षा-परिणाम अच्छा है..

गुरु ने शिष्य से कहा है..

शिष्य गुरु से निवेदन करता है..

जाते हुए बालक को देखो..

पढ़ते हुए छात्र को फल दो..

बालक बैल को घर ले जाता है..

कोष्ठ में दिए शब्दों में से उचित शब्द को छाँट कर भरो :—

शिष्यः अजां ग्रामम्.. (अनय, अनयत्) ।

भृत्यः पशुं गृहम्.. (नय, नयतु, नयन्तु) ।

पठते.. फलं यच्छ (छात्रम्, छात्राय) ।

यूयम् अनुशासनं.. (पालय, पालयत) ।

नी धातु (उभय०) के लङ् के रूप लिखो :—

अनयत्........................		प्र०	अनयत........................
....		म०	....
....		उ०	....

दिनाङ्क........................ हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १२

शब्दावली—वधू—वहू, wife, तनूः—शरीर, body, चमूः—सेना, army, संचिका—कापी, exercise book, कर्गदम्—कागज, paper, पृष्ठम्—पृष्ठ, page, लेखनी—कलम, pen, धारा लेखनी—फाउन्टेनपेन, fountain pen, हृ—ले जाना, चुराना, to carry, to steal.

नियम २५—(चतुर्थी) जिस प्रयोजन के लिए जो वस्तु या क्रिया होती है, उसमें चतुर्थी होती है। मोक्षाय हरिं भजति—मोक्ष के लिए हरि को भजता है। शिशुः दुग्धाय क्रन्दति—शिशु दूध के लिए रोता है।

नियम २६—(तुमुन् प्रत्यय) को, के लिए, अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। इसका तुम् शेष रहता है। यह अव्यय होता है, अतः इसके रूप नहीं चलते हैं। जैसे—गम्—गन्तुम् (जाने को), पठ्—पठितुम् (पढ़ने को), लिख्—लेखितुम् (लिखने को), कृ—कर्तुम् (करने को), पा (पि)—पातुम् (पीने को), दृश्—द्रष्टुम् (देखने को)।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

वधूः सुन्दरेण वस्त्रेण शोभते। वस्त्रेण तनूम् आच्छादय। चम्वां सैनिकाः भवन्ति। संचिकायां लेखन्या लिख। अस्मिन् कर्गदे धारालेखन्या शोभनं लिख। मम संचिकायां षष्टिः (६०) पृष्ठानि सन्ति चोरः धारालेखनीम् अहरत्। अहं गृहं गन्तुम् इच्छामि। सः इदं कार्यं कर्तुं शक्नोति। अहं भवन्तं द्रष्टुम् इच्छामि।

वधू शब्द के इन विभक्तियों में रूप लिखो :—

.... प्र० .... द्वि०

.... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ : —

वधू का मुख सुन्दर है ....

कपड़े से शरीर को ढको ....

इस सेना में कितने सैनिक हैं ? ....

बालक ने कापी पर कलम से लिखा ....

फाउन्टेन पेन से कापी पर लिखो ....

मेरी पुस्तक में ६० पृष्ठ हैं ....

चोर ने फाउन्टेनपेन चुराया ....

वह मोक्ष के लिये विष्णु को भजता है ....

बालक दूध के लिए रोता है ....

राम यह काम कर सकता है ....

मैं पिता को देखना चाहता हूँ ....

वह घर जाना चाहता है ....

इन प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दो :—

वधूः केन शोभते ? ....

संचिकायां कया लिख ? ....

तव संचिकायां कति पृष्ठानि सन्ति ? ....

त्वं कं द्रष्टुम् इच्छसि ? ....

हृ धातु (उभय०) के विधिलिङ् के रूप लिखो .—

हरेत् .... प्र० हरेत ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १३

शब्दावली—मातृ—माता, mother, क्रीडा—खेल, game, क्रीडकः—खिलाड़ी, player, क्रीडाक्षेत्रम्—खेल का मैदान, play-ground, पादकन्दुकन्—फुटबॉल, football, यष्टिका—हॉकी hockey, आसन्दिका—कुर्सी, chair, लेखनपीठम्—डेस्क, desk, काष्ठासनम्—बेंच, bench, इष्—चाहना, to desire

नियम २७—(पंचमी) अपादान कारक में पंचमी होती है। वृक्षात् पत्रं पतति पेड़ से पत्ता गिरता है।

नियम २८—(क्त्वा प्रत्यय) 'कर' या 'करके' अर्थ में क्त्वा प्रत्यय होता है, इसका त्वा शेष रहता है। यह अव्यय है, इसके रूप नहीं चलते हैं। जैसे- पठ्—पठित्वा (पढ़कर), लिख्—लिखित्वा (लिखकर), कृ—कृत्वा (करके), गम्—गत्वा (जाकर), दा—दत्त्वा (देकर), खाद्—खादित्वा (खाकर), पा—पीत्वा (पीकर), नम्—नत्वा (नमस्कार करके)।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :-

वन्दे मातरम्। मातुः आदरं कुरु। नरः अश्वात् अपतत्। क्रीडाक्षेत्रे क्रीडकाः पादकन्दुकेन यष्टिकाभिः च क्रीडन्ति। छात्राणां क्रीडां पश्य। गुरुः आसन्दिकायाम् उपविशति। छात्राः काष्ठासने उपविशन्ति। लेखनपीठे तेषां पुस्तकानि सन्ति। रामः पाठं पठित्वा, लेखं लिखित्वा, भोजनं खादित्वा, जलं पीत्वा, मातरं नत्वा च विद्यालयं गच्छति।

मातृ शब्द के इन विभक्तियों में रूप लिखो :—

.... प्र० .... द्वि०

.... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ :—

माता की वन्दना करता हूँ ....

सदा माता का आदर करो ....

पेड़ से पत्ता गिरा ....

खिलाड़ी खेल के मैदान में खेल रहा है ....

छात्र फुटबाल और हॉकी से खेल रहे हैं ....

अध्यापक कुर्सी पर बैठा है ....

मैं बेंच पर बैठा हूँ ....

डेस्क पर मेरी पुस्तकें हैं ....

अपना पाठ पढ़ कर विद्यालय जावो ....

गुरु को नमस्कार कर आसन पर बैठो ....

मैं एक फल चाहता हूँ ....

इन वाक्यों को शुद्ध करो :—

नरः अश्वेन अपतत ....

अहं फलम् ऐच्छत् ....

ते पुस्तकानि इच्छत ....

मातुः वन्दे ....

इष् धातु (पर०) के लट् और लङ् के रूप लिखो :—

इच्छति .... प्र० ऐच्छत् ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १४

शब्दावली—दिश् दिशा, direction, वस्त्रम्—वस्त्र, clothes, शाटिका—साड़ी, saree, अधोवस्त्रम्—धोती, dhoti, कञ्चुकः—कुर्ता, कमीज, shirt, कम्बलः—कम्बल, blanket, नीशारः—रजाई, quilt, शिरस्कम्—टोपी, cap, स्पृश्—छूना, to touch.

नियम २९—(पंचमी) भय और रक्षा अर्थ की धातुओं के साथ भय के कारण में पंचमी होती है। बालः चोरात् बिभेति—बालक चोर से डरता है। स बालं चोरात् त्रायते—वह बालक को चोर से बचाता है।

नियम ३०—(ल्यप् प्रत्यय) यदि कोई उपसर्ग (प्र, वि, आ, निर्, सम् आदि) धातु से पहले होगा तो त्वा के स्थान पर ल्यप् (य) होगा। जैसे—आदाय (लेकर), आगत्य (आकर), आनीय (लाकर), परिधाय (पहन कर)।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

पूर्वस्यां दिशि सूर्यः उदेति। चतस्रः दिशः सन्ति। बालकः कञ्चुकम् अधोवस्त्रं च धारयति। बालिका शाटिकां परिधाय विद्यालयम् अगच्छत्। शिरसि शिरस्कं धारय। रात्रौ कम्बलेन नीशारेण च आत्मानम् आच्छादय। पुस्तकानि आदाय विद्यालयं गच्छ। गृहम् आगत्य गृहस्य कार्यं कुरु। जलम् आनीय पित्रे देहि। इमानि पुष्पाणि न स्पृश।

दिश् शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

....प्र० ....द्वि०

....तृ० ....स०

संस्कृत बनाओ :—

पूर्व दिशा में सूर्य उदय होता है ....

दिशाएँ चार हैं ....

बालिका चोर से डरती है ....

राजा बालक को चोर से बचाता है ....

सिर पर टोपी पहनो ....

बालक कुर्ता धोती पहनता है ....

बालिका साड़ी पहनती है ....

रात में कम्बल और रजाई ओढ़ो ....

मुझे एक पुस्तक लाकर दो ....

पुस्तकें लेकर पढ़ने को जाओ ....

यहाँ आकर काम करो ....

मैंने इन फूलों को छूआ ....

रिक्त स्थानों को भरो :—

अहं पुष्पाणि .... । ते फलानि .... ।

इमानि पुष्पाणि न .... । त्वं किमर्थं पुष्पाणि .... ।

बालिका चोरात् .... । स बालं चोरात् .... ।

जलम् .... मह्यं देहि । अत्र .... कार्यं कुरु ।

स्पृश् धातु (पर०) के लङ् और ल्टट् के रूप लिखो :—

अस्पृशत् .... प्र० स्प्रक्ष्यति ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १५

शब्दावली—क्षुध्—भूख, hunger, पाचकः—रसोइया, cook, रोटिका—रोटी, bread, सूप—दाल, soup, भक्तम्—भात, rice, शाकः—साग, vegetable, मिष्टान्नम्—मिठाई, sweets, सिता-चीनी, sugar, मोदकः—लड्डू, a kind of sweet, नवनीतम्—मक्खन, butter, घृतम्—घी, ghee, प्रच्छ्—पूछना, to ask,

नियम ३१ - (पंचमी) जिससे विद्या पढ़ी जाती है, उसमें पंचमी होती है। गुरोः पठति—गुरु से पढ़ता है। उपाध्यायात् विद्याम् अधीते—गुरु से विद्या पढ़ता है।

नियम ३२—(तव्य प्रत्यय) 'चाहिए' अर्थ में धातु से तव्य प्रत्यय होता है। तव्य प्रत्यय होने पर कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार। मया गन्तव्यम्—मुझे जाना चाहिये। त्वया पुस्तकानि पठितव्यानि—तुझे पुस्तकें पढ़नी चाहिएँ। मया कार्यं कर्तव्यम्—मुझे काम करना चाहिए। त्वया मिष्टान्नं खादितव्यम्। तेन दुग्धं पातव्यम्।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

अहं क्षुधा पीडितः अस्मि। पाचकः रोटिकां सूपं भक्तं च पचति। रोटिकां सूपं भक्तं शाकं च खाद। मह्यं मिष्टान्नं मोदकः नवनीतं च रोचन्ते। सूपे घृतं दुग्धे सितां च निक्षिप (डालो)। अहं गुरुं प्रश्नम् अपृच्छम्। सः गुरुं प्रश्नं प्रक्ष्यति। त्वया एतत् कार्यं कर्तव्यम्। त्वया भोजनं खादितव्यम्। मया विद्यालयः गन्तव्यः।

क्षुध् शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

.... प्र० .... द्वि०

.... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ :—

वह भिक्षुक भूख से पीड़ित है..............................

रसोइया भात और दाल पकाता है..............................

रोटी, दाल, भात और साग खाओ..............................

बालक को मिठाई अच्छी लगती है..............................

लड्डू, घी और मक्खन खाओ..............................

दूध में चीनी डालो..............................

मैं गुरु से प्रश्न पूछता हूँ..............................

राम ने कृष्ण से एक प्रश्न पूछा..............................

कृष्ण ने गुरु से विद्या पढ़ी..............................

मुझे वहाँ जाना चाहिए..............................

तुझे पुस्तकें पढ़नी चाहिएँ..............................

तुझे काम करना चाहिए..............................

कोष्ठ में दिए शब्दों में से उचित शब्द को छाँटकर भरो :—

अहं.......... प्रश्नम् अपृच्छम् । (गुरोः, गुरुम्)

त्वया पुस्तकानि.............. । (पठितव्यम्, पठितव्यानि)

..............एतत् कार्यं कर्तव्यम् । (अहम्, मया)

.... मिष्टान्नं रोचते । (बालकम्, बालकाय)

प्रच्छ् धातु पर०) के लङ् और लृट् के रूप लिखो :—

अपृच्छत्..............	प्र०	प्रक्ष्यति..............
....	म०	....
....	उ०	....

दिनाङ्क.............. हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य..............

अभ्यास १६

शब्दावली—वारि—जल, water, शुचि—स्वच्छ, पवित्र, pure, सुरभि—सुगन्धित, fragrant, प्रासादः महल, palace, गृहम्—घर, house द्वारम्—दरवाजा, gate, गवाक्षः—खिड़की, window, प्राङ्गणम्—आंगन, courtyard, भवनपृष्ठम्—छत, roof, सोपानम्—सीढ़ी, stairs, स्था—रुकना, to stand, to stay.

नियम ३३—(पंचमी) जिस वस्तु से किसी को हटाया जाता है, उसमें पंचमी होती है। गोपालः यवेभ्यः पशुं पारयति निवारयति वा—ग्वाला जौ से पशु को हटाता है। पुत्रं पापात् वारयति।

नियम ३४—(अनीय प्रत्यय) 'चाहिए' अर्थ में धातु से अनीय प्रत्यय होता है। अनीय—प्रत्ययान्त के साथ कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और कर्म के अनुसार इसके लिंग, विभक्ति, वचन होंगे। मया पुस्तकानि पठितव्यानि। त्वया कार्यं करणीयम्। तेन लेखः लेखनीयः।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

शुचि वारि पिब। सुरभि पुष्पं जिघ्र। रामः प्रासादे निवसति। मम गृहं नगरे वर्तते। गृहस्य द्वारम् उद्घाटय। द्वारं पिधेहि (बन्द करो)। गवाक्षं पिधेहि। प्राङ्गणे बालाः क्रीडन्ति। भवनपृष्ठे काकाः तिष्ठन्ति। सोपानेन भवनपृष्ठं गच्छ। त्वमत्रैव तिष्ठ।

वारि शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

....प्र० ....तृ०

....पं० ....ष०

संस्कृत बनाओ :—

स्वच्छ जल पीओ ....

राम सुगन्धित फूल सूँघता है ....

कृष्ण महल में रहता है ....

मेरा घर शहर में है ....

दरवाजा खोलो, खिड़की बन्द करो ....

दरवाजा बन्द करो, खिड़की खोलो ....

आँगन में बच्चे खेल रहे हैं ....

छत पर बन्दर बैठे हैं ....

सीढ़ी से छत पर जाओ ....

गुरु शिष्य को पाप से हटाता है ....

तुझे पुस्तकें पढ़नी चाहिएँ ....

मुझे यह काम करना चाहिए ....

इन प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दो :—

कीदृशं जलं पिब ? ....

कृष्णः कुत्र निवसति ? ....

किम् उद्घाटय, कं च पिधेहि ? ....

गुरुः कं कस्मात् वारयति ? ....

स्था धातु (पर०) के लोट् और लङ् के रूप लिखो :—

तिष्ठतु .... प्र० अतिष्ठत् ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १७

शब्दावली—जगत्—संसार, world, मुखम्—मुँह, mouth, जिह्वा—जीभ, tongue, दन्ता—दाँत, teeth, कण्ठः—गला, neck, वक्षःस्थलम्—छाती, chest, अङ्गुलयः—अँगुलियाँ, fingers, भुजौ—बाँह, arms, हस्तौ—हाथ, hands, दृश्—देखना, to see.

नियम ३५—(पंचमी) उद्भवति, प्रभवति, उद्गच्छति, जायते (जब इन चारों का उत्पन्न होना या निकलना अर्थ हो), निलीयते (छिपता है) के साथ पंचमी होती है। गङ्गा हिमालयात् उद्भवति, प्रभवति, उद्गच्छति वा—गङ्गा हिमालय से निकलती है। बीजेभ्यः अङ्कुराः जायन्ते—बीजों से अंकुर होते हैं। कृष्णः मातुः निलीयते - कृष्ण माता से छिपता है।

नियम ३६—(ल्युट् प्रत्यय) भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से ल्युट् (अन) होता है, इसका अन शेष रहता है। यह नपुं० होता है। इसके साथ षष्ठी होती है। जैसे पुस्तकस्य पठनम्। लेखस्य लेखनम्। कार्यस्य करणम्। सत्यस्य भाषणम्। पशोः मरणम्।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

ईशः जगतः कर्ता अस्ति। जगति जनाः वसन्ति। इदं मम शरीरम् अस्ति। शरीरे मुखं, जिह्वा, दन्ताः, कण्ठः, वक्षःस्थलम्, अङ्गुलयः, भुजौ, हस्तौ च भवन्ति। मुखे जिह्वा वर्तते। जिह्वाया वदामि। दन्तैः भोजनं खादामि। हस्ताभ्यां कार्यं करोमि। त्वं फलं पश्य। अहं मातरम् अपश्यम्।

जगत् शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

.... प्र० .... तृ०

.... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ :—

संसार में सभी जीव रहते हैं ....

संसार का कर्ता ईश्वर है ....

सीता का मुख सुन्दर है ....

मेरे मुँह में जीभ और दाँत हैं ....

हम जीभ से बोलते हैं ....

मेरा गला, छाती और भुजाएँ ये हैं ....

हाथों से सारा काम करता हूँ ....

यमुना हिमालय से निकलती है ....

बीजों से अंकुर होते हैं ....

राम पिता से छिपता है ....

सत्य का भाषण उत्तम कार्य है ....

मैंने एक सुन्दर पक्षी देखा ....

इन वाक्यों को शुद्ध करो :—

सीतायाः मुखं सुन्दरः अस्ति ....

बीजैः अंकुराः जायते ....

रामः पित्रा निलोयते ....

अहम् एकं सुन्दरं पक्षिणम् अपश्यत् ....

दृश् धातु (पर०) के लट् और लृट् के रूप लिखो :—

पश्यति .... प्र० द्रक्ष्यति ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १८

शब्दावली—नामन्—नाम, name, श्वशुरः—ससुर, father-in-law, श्यालः—साला, brother-in-law, अग्रजः—बड़ा भाई, elder brother, अग्रजा—बड़ी बहिन, elder sister, अनुजः—छोटा भाई, younger brother, अनुजा—छोटी बहिन, younger sister, पुत्री - लड़की, daughter, पौत्री—पोती, grand-daughter.

नियम ३७—(पंचमी) तुलना में जिससे तुलना की जाती है, उसमें पंचमी होती है। जैसे —रामात् कृष्णः पटुतरः —राम से कृष्ण अधिक चतुर है। धनात् ज्ञानं गुरुतरम्।

नियम ३८—(तृच् प्रत्यय) धातु से 'वाला' या कर्ता अर्थ में तृच् होता है। तृच् का तृ शेष रहता है। जैसे—कृ कर्ता (करनेवाला), हृ—हर्ता (हरने वाला), धृ—धर्ता (धारण करने वाला)। इसके रूप पुंलिग में कर्तृ के तुल्य और स्त्रीलिंग में अन्त में ई लगाकर नदी के तुल्य चलेंगे ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

मम नाम देवः अस्ति । मम माता पिता च अत्रैव वसतः । मम एकः अग्रजः, एका अग्रजा, द्वौ अनुजौ, द्वे अनुजे च सन्ति । मम पितृव्यस्य द्वौ पुत्रौ, द्वे पुत्र्यौ, एकः पौत्रः, एका पौत्री च सन्ति । मम श्वशुरः, श्वश्रू, श्यालः च सज्जनाः सन्ति। अहं ह्यः (व्यतीत कल) नगरम् अगच्छम् । अहं श्व (आगामी कल) गृहं गमिष्यामि ।

नामन् शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

.... प्र० .... तृ०

.... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ :—

तुम्हारा नाम क्या है ? ....

मेरा नाम राम है ....

तेरे पिता और माता कहाँ हैं ? ....

मेरे दो बड़े भाई और एक छोटी बहन हैं ....

तेरे दो छोटे भाई और एक बड़ी बहन हैं ....

राम के सास और ससुर सज्जन हैं ....

राम के साले का नाम रमेश है ....

कृष्ण की दो पुत्रियाँ और एक पौत्री हैं ....

कृष्ण से विष्णु अधिक चतुर है ....

धन से ज्ञान बढ़कर है ....

मैं कल प्रयाग गया था ....

मैं कल वाराणसी जाऊँगा ....

रिक्त स्थानों में गम् धातु के रूप भरो :—

अहं विद्यालयं ....। अहं ह्यः नगरम् ....।

त्वं श्वः कुत्र ....। छात्रः भ्रमणार्थं ....।

वाटिकायां भ्रमणार्थं ....। त्वं ह्यः कुत्र ....।

युवाम् नगरम् ....। आवां विद्यालयम् ....।

गम् धातु (पर०) के लोट् और लङ् के रूप लिखो :—

गच्छतु .... प्र० अगच्छत् ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १९

शब्दावली शर्मन्—सुख, happiness, वर्त्मन्—मार्ग, way, चर्मन्—चमड़ा, skin, leather, कुम्भकारः—कुम्हार, potter, चित्रकारः—चित्रकार, painter, रजकः—धोबी, washerman, तन्तुवायः—जुलाहा, weaver, श्रमिकः—मजदूर, labourer, मालाकारः—माली, gardener, घटः—घड़ा, pitcher.

नियम ३९ (षष्ठी) संबन्ध कारक के अर्थ में षष्ठी होती है। रामस्य पुस्तकम्—राम की पुस्तक। गङ्गायाः जलम्। वृक्षस्य पत्रम्।

नियम ४०—(ण्वुल् प्रत्यय) 'करने वाला' या कर्ता अर्थ में ण्वुल् प्रत्यय होता है। ण्वुल् को 'अक' हो जाता है। जैसे—पठ्—पाठकः (पढ़ने वाला), लिख् लेखकः (लिखने वाला), कृ—कारकः (करने वाला), सेव—सेवकः (नौकर), जन्—जनकः (पिता), हृ—हारकः (नाशक)।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

सर्वे शर्म लभन्ताम्। तव वर्त्मनि शर्म वर्तताम्। साधुना वर्त्मना गच्छ। चर्मकारः चर्मणा उपानहं (जूते को) रचयति। कुम्भकारः घटं, चित्रकारः चित्रं, मालाकारः मालां च रचयति। रजकः वस्त्राणि धावति (धोता है)। श्रमिकः भारं वहति (ढोता है)। तन्तुवायः वस्त्रं वयति (बुनता है)। शुचि वारि पिब। सेवकः स्वामिनं सेवते। पाठकः पठति, लेखक च लिखति।

शर्मन् शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

....प्र० ....तृ०

....पं० ....ष०

संस्कृत बनाओ :—

सब सुख पावें ....

तेरे मार्ग में सुख हो ....

सदा सन्मार्ग से चलो ....

कुम्हार घड़े बनाते हैं ....

माली मालाएँ बनाते हैं ....

जुलाहे वस्त्र बुनते हैं ....

मजदूर बोझा ढोते हैं ....

चमार चमड़े से जूता बनाता है ....

चित्रकार चित्र बनाते हैं ....

गंगा का जल स्वच्छ है ....

पढ़ने वाला पुस्तक पढ़ता है ....

सदा स्वच्छ जल पीओ ....

कोष्ठ में दिए शब्दों में से उचित शब्द को छाँटकर भरो :—

तव .... शर्म वर्तताम् । (वर्त्म, वर्त्मनि)

तन्तुवायाः वस्त्राणि .... । (वयति, वयन्ति)

त्वं दुग्धम् .... । (अपिबत्, अपिबः)

आवां जलम् .... । (अपिबताम्, अपिबाव:)

पा (१) धातु पर०) के लङ् और लृट् के रूप लिखो :—

अपिबत् .... प्र० पास्यति ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २०

शब्दावली—महिषः—भैंसा, buffalo, कुक्कुरः—कुत्ता, dog, मार्जारी—बिल्ली, cat, मूषकः—चूहा, rat, गर्दभः—गधा, donkey, शृगालः—गीदड़, jackal, अजा—बकरी, she-goat, अश्वः—घोड़ा, horse, वृषभः—बैल, bull, चुर्—चुराना, to steal

नियम ४१—(षष्ठी) स्मरण अर्थ की धातुओं के साथ (खेदपूर्वक स्मरण में) कर्म में षष्ठी होती है। जैसे—शिशुः मातुः स्मरति—शिशु माता को खेदपूर्वक स्मरण करता है।

नियम ४२—(क्तिन् प्रत्यय) धातुओं से भाववाचक शब्द बनाने के लिए क्तिन् प्रत्यय होता है। क्तिन् का 'ति' शेष रहता है। ति—प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। मति के तुल्य रूप चलेंगे। जैसे—कृ—कृति, धृ—धृति, वच्—उक्ति, गम्—गति, भू—भूति।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

त्वया किं पठितम्? मया पुस्तकं पठितम्। तुभ्यं किं रोचते? मह्यं मिष्टान्नं रोचते। नगरे महिषाः, कुक्कुरा, मार्जार्यः, मूषका, गर्दभाः, अश्वाः, अजाः, वृषभाः, च भवन्ति। वने शृगालाः वसन्ति। अश्वारोहः (घुड़सवार) अश्वम् आरोहति। कुक्कुराः गृहाणि रक्षन्ति। कदापि कस्यापि वस्तु न चोरय। अहं कस्यापि धनं न अचोरयम्।

युष्मद् शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

....प्र० ....द्वि०

....तृ० ....च०

....ष० ....स०

संस्कृत बनाओ :—

तुम्हें क्या अच्छा लगता है ? ....

मुझे फल अच्छा लगता है ....

कुत्ता घर की रक्षा करता है ....

बिल्ली दूध पीती है ....

गधा भार ढोता है ....

बकरी का दूध मीठा होता है ....

घुड़सवार घोड़े पर चढ़ता है ....

गीदड़ जंगल में रहते हैं ....

शिशु माता को याद करता है ....

कभी किसी का धन न चुराओ ....

मैं किसी की वस्तु नहीं चुराता हूँ ....

मैंने पुस्तक नहीं चुराई ....

इन प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर दो : –

तुभ्यं किं रोचते ? ....

त्वया अद्य किं पठितम् ? ....

त्वया अद्य किं लिखितम् ? ....

कः अश्वम् आरोहति ? ....

चुर् धातु (पर०) के लोट् और विधिलिङ् के रूप लिखो :—

चोरयतु .... प्र० चोरयेत् ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २१

शब्दावली—वायसः—कौवा, crow, कपोतः—कबूतर, pigeon, बकः—बगुला, crane, गृध्रः—गीध, vulture, उलूकः—उल्लू, owl, कुक्कुटः—मुर्गा, cock, चिन्त्—सोचना, to think

नियम ४३ - (षष्ठी) बहुतों में से एक को छाँटने अर्थ में, जिसमें से छाँटा जाए, उसमें षष्ठी और सप्तमी दोनों होती हैं। जैसे छात्राणां छात्रेषु वा कृष्णः श्रेष्ठः। कवीनां कलिदासः श्रेष्ठः।

नियम ४४ - (दीर्घसन्धि) अ, इ, उ और ऋ के बाद सवर्ण अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर दीर्घ अक्षर हो जाता है। (१) अ या आ + अ या आ=आ। (२) इ या ई + इ या ई=ई। (३) उ या ऊ + उ या ऊ=ऊ। (४) ऋ या ॠ + ऋ या ॠ=ॠ। जैसे—विद्या + आलयः= विद्यालयः। श्री + ईशः=श्रीशः। गुरु + उपदेशः=गुरूपदेशः।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

वृक्षे वायसाः, कपोताः, गृध्राः, उलूकाः च सन्ति। पक्षिणां वायसः धूर्तः भवति। गृध्रः लोभी भवति। सरोवरस्य तटे बकाः सन्ति। बकाः मत्स्यान् खादन्ति। गृहस्य प्राङ्गणे कुक्कुटाः विचरन्ति। त्वं किं चिन्तयसि? अहम् एकम् उपायं चिन्तयामि। अस्माकम् उद्याने वायसाः, कुक्कुटाः च भ्रमन्ति। मम मनः पठने लगति।

अस्मद् शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

.... प्र० .... द्वि०

.... तृ० .... च०

.... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ :—

उस पेड़ पर कौए हैं ....

आँगन में कबूतर घूम रहे हैं ....

घर के सामने मुर्गे घूम रहे हैं ....

गीध पेड पर बैठा है ....

तालाब के किनारे बगुला बैठा है ....

उल्लू रात में शब्द करता है ....

छात्रों में राम सबसे चतुर है ....

कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है ....

तुम क्या सोच रहे हो ? ....

मैंने एक उपाय सोचा ....

हमारे बगीचे में कबूतर हैं ....

हमारा मन पढ़ने में लगता है ....

इन स्थानों को शुद्ध करो :—

छात्रेभ्यः रामः पटुः ....

त्वं किं चिन्तयति ? ....

अहम् एकम् उपायम् अचिन्तयत् ....

त्वम् ईश्वरं चिन्तयेत् ....

चिन्त् धातु (पर०) के लोट् और लङ् के रूप लिखो :—

चिन्तयतु	प्र०	अचिन्तयत् ....
....	म०	....
....	उ०	....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २२

शब्दावली—सरोवरः--तालाब, pond, कूपः--कुँआ, well, सागरः--समुद्र, ocean मत्स्यः—मछली, fish, मकरः--मगर, crocodile, धीवरः--धीवर, fisherman, पद्मम्- कमल, lotus, तरङ्गः- लहर, wave, कथ् --कहना, to tell, व्यापादय--मारना, to kill, विकस्--खिलना, to bloom.

नियम ४५--(षष्ठी) उपरि (ऊपर), अधः (नीचे), नीचैः (नीचे), पुरः (सामने), पश्चात् (पीछे), अग्रे (आगे), अग्रतः (आगे) के साथ षष्ठी होती है। गृहस्य उपरि वृक्षस्य नीचैः अधः वा, भवनस्य पुरः पश्चात् च, विद्यालयस्य अग्रे अग्रतः वा पक्षिणः सन्ति।

नियम ४६–(गुण संधि) अ या आ के बाद (१) इ या ई होगा तो दोनों को ए, (२) उ या ऊ होगा तो दोनों को ओ, (३) ऋ या ॠ होगा तो दोनों का अर्, (४) ऌ होगा तो अल् होगा। जैसे–रमा + ईशः=रमेशः। पर + उपकारः=परोपकारः। महा + ऋषिः= महर्षिः। तव + ऌकारः=तवल्कारः।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

सरोवरे मत्स्याः विचरन्ति। कूपे दर्दुराः सन्ति। सागरे मकराः भवन्ति। समुद्रे तरङ्गाः उद्भवन्ति। धीवरः मत्स्यान् व्यापादयति। तडागे पद्मानि विकसन्ति मकराः मनुष्यान् खादन्ति। सर्वस्मै मधुरं वचनं रोचते। सर्वस्मिन् जगति सज्जनाः दुर्जनाः च सन्ति। सत्यं कथय।

सर्व शब्द (पुं०) के इन विभक्तियों के रूप लिखो :--

.... प्र० .... द्वि०

.... च० .... पं०

.... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ :—

तालाब में मछलियाँ घूम रही हैं ....

तालाब में कमल खिलते हैं ....

समुद्र में मगर घूमते हैं ....

मगर मनुष्यों को खा जाते हैं ....

धीवर मछलियों को मारते हैं ....

कूंए में मधुर जल है ....

तालाब में तरंगें उठती हैं ....

घर के सामने बन्दर बैठे हैं ....

वृक्ष के ऊपर पक्षी हैं ....

गुरु के सामने छात्र हैं ....

सदा सत्य ही कहो ....

मैंने झूठ नहीं कहा था ....

रिक्त स्थानों में 'सर्व' शब्द रूप भरो :—

.... जनाः सुखम् इच्छन्ति । .... जनानां हितं भवेत् ।

.... बालिकाः पाठं पठन्ति । .... अवस्थाम् परोपकारं कुर्यात् ।

.... जगति ईश्वरः वर्तते । .... बालकेभ्यः फलानि यच्छ ।

.... जगत् नश्वरम् अस्ति । .... पुस्तकानि अत्र आनय ।

कथ् धातु (पर०) के लट् और लोट् के रूप लिखो .—

कथयति .... प्र० कथयतु ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २३

शब्दावली--यात्रा-यात्रा, journey, पथिकः--पथिक, traveller, तीर्थम्--तीर्थ, place of pilgrimage, धूमयानम्--रेलगाड़ी, train, मोटरयानम्--मोटर, bus, यात्राशुल्कम्--किराया, fare, यात्रिन्--यात्री, tourist, भक्ष्--खाना, to eat.

नियम ४७--(षष्ठी) कृते (लिए), समक्षम् (सामने), मध्ये (बीच में), अन्तः (अन्दर), अन्तरे (अन्दर) के साथ षष्ठी होती है। जैसे--भोजनस्य कृते अत्र आगच्छ--भोजन के लिए यहाँ आओ। गृहस्य समक्षम्, मध्ये, अन्तः वा बालाः सन्ति--घर के सामने, बीच में या अन्दर बालकः हैं।

नियम ४८—(वृद्धि संधि) (१) अ या आ के बाद ए या ऐ होगा तो दोनों को 'ऐ' होगा। (२) अ या आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनों को औ होगा। जैसे—अत्र + एव = अत्रैव। सा + एषा = सैषा। महा + ओषधिः = महौषधिः।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

पथिकः यात्रार्थं ग्रामान् नगराणि च गच्छति। यात्री यात्रार्थं तीर्थानि गच्छति। स धूमयानेन मोटरयानेन वा तीर्थानि गच्छति। तदर्थं यात्राशुल्कं च प्रयच्छति। स धूमयानेन निश्चितं स्थानं प्राप्नोति। तत्र स्वकीयं कार्यं करोति, तीर्थेषु स्नानं च करोति।

किम् शब्द (पुं०) के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

....प्र० ....द्वि०

....ष० ....स०

संस्कृत बनाओ :—

यात्री यात्रा के लिए तीर्थों को जाते हैं ....

पथिक नगर को जाता है ....

रेलगाड़ी या मोटर से तीर्थों को जाते हैं ....

वे यात्रा के लिए किराया देते हैं ....

वे तीर्थों में स्नान करते हैं ....

वाराणसी तीर्थस्थान है ....

प्रयाग में गंगा और यमुना का संगम है ....

यात्री रेल से प्रयाग पहुँचता है ....

वह वहाँ अपना काम करता है ....

तुम किस कक्षा में पढ़ते हो ? ....

तुम किस विद्यालय में पढ़ते हो ? ....

किस नगर में तुम्हारा घर है ? ....

कोष्ठ में दिए शब्दों में से उचित शब्द को छाँटकर भरो :—

त्वं .... विद्यालये पठसि ? (कस्याम्, कस्मिन्)

त्वं .... कक्षायां पठसि ? (कस्मिन्, कस्याम्)

.... बालिकायै धनं यच्छसि ? (कस्मै, कस्यै)

किं त्वं भोजनम् .... ? (अभक्षयत्, अभक्षयः)

भक्ष् धातु (पर०) के लङ् और विधिलिङ् के रूप लिखो :—

अभक्षयत् .... प्र० भक्षयेत् ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २४

शब्दावली आपणः दूकान, shop, आपणिकः—दूकानदार, shop-keeper, विपणिः - बाजार, market, ग्राहकः—मोल लेने वाला, purchaser, क्री-खरीदना, to buy, विक्री - बेचना, to sell

नियम ४९—(षष्ठी) दूर और समीपवाची शब्दों के साथ षष्ठी और पंचमी दोनों होती हैं। ग्रामस्य ग्रामाद् वा दूरम्—गाँव से दूर। जनकस्य समीपात्—पिता के पास से। गुरोः पार्श्वात्—गुरु के पास से।

नियम ५०—(यण् सन्धि) इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ को र्, लृ को ल् हो जाता है, बाद में कोई असवर्ण स्वर हो तो। जैसे प्रति + एकः = प्रत्येकः। मधु + अरिः = मध्वरिः। पितृ + आ = पित्रा। लृ + आकृतिः = लाकृतिः।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

ग्राहकः विपणौ एकम् आपणम् अगच्छत्। स आपणिकात् वस्त्रं क्रीणाति। आपणिकः वस्त्रं विक्रीणीते। ग्राहकः पुनः फलानि, मिष्टान्नानि च क्रीणाति। आपणिकाः फलानि मिष्टान्नानि च विक्रीणते। तस्मिन् वृक्षे खगा सन्ति। तासु शाखासु पत्राणि सन्ति। अहमेतत् कार्यम् अकरवम्। त्वं कार्यं कुरु।

तत् शब्द (पुं०) के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

.................................प्र०	.................................द्वि०
.................................तृ०	.................................च०
.................................ष०	.................................स०

संस्कृत बनाओ :—

बाजार में एक दूकान है ....

ग्राहक दूकान पर गया ....

वह दूकानदार से वस्त्र खरीदता है ....

दूकानकार वस्त्र बेचता है ....

दूकानदार मिठाइयाँ भी बेचते हैं ....

मैं पिता के पास से आ रहा हूँ ....

मैं गुरु के पास जा रहा हूँ ....

गाँव से दूर मेरा घर है ....

उस पेड़ पर कितने पक्षी हैं ? ....

उस शाखा पर दस पक्षी हैं ....

मैंने यह काम नहीं किया है ....

मैं यह काम कल करूँगा ....

इन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दो : –

ग्राहकः विपणौ कुत्र अगच्छत् ? ....

ग्राहकः आपणिकात् किं क्रीणाति ? ....

आपणिकः किं विक्रीणीते ? ....

तस्यां शाखायां कति खगाः सन्ति ? ....

कृ धातु (पर०) के लोट् और लङ् में रूप लिखो :—

करोतु .... प्र० अकरोत् ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनांक .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २५

शब्दावली—आभूषणम्—आभूषण, ornament, अङ्गुलीयकम्—अँगूठी, ring, हारः—हार, necklace, कर्णाभरणम्—कनफूल, ear ring, कङ्कणम्—कंकण, bracelet, दर्पणः—शीशा, looking-glass, फेनिलः – साबुन, soap.

नियम ५१ – (सप्तमी) अधिकरण कारक में सप्तमी होती है। जैसे विद्यालये पठति। गृहे निवसति।

नियम ५२ (अयादि सन्धि) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् होता है, बाद में कोई स्वर हो तो। (शब्द के अन्तिम ए या ओ के बाद अ होगा तो नहीं। (१) हरे + ए = हरये। जे + अः = जयः। (२) पो + अनः = पवनः। (३ नै + अकः = नायकः। (४) पौ + अकः = पावकः। द्वौ + एतौ = द्वावेतौ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

नार्यः आभूषणानि धारयन्ति। एताः अङ्गुलीषु अङ्गुलीयकम्, गले हारम्, कर्णयोः कर्णाभरणम् हस्तयोः कङ्कणं च धारयन्ति। एताः दर्पणे मुखं पश्यन्ति। एताः फेनिलेन स्नानं कुर्वन्ति। एतासां सौन्दर्यं दर्शनीयं भवति। आभूषणैः शरीरम् अलङ्कृतं भवति। त्वं कुत्र आसीः ? अहं गृहे आसम्।

एतत् शब्द (स्त्री०) के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

.... प्र० .... द्वि०

.... तृ० .... च०

.... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ :—

मैं विद्यालय में पढ़ता हूँ ....

तुम किस घर में रहते हो ? ....

स्त्रियाँ आभूषण पहनती हैं ....

ये अँगुलियों में अँगूठी पहनती हैं ....

रमा गले में हार पहनती है ....

सुशीला कानों में कनफूल पहनती है ....

प्रभा हाथों में कंकण पहनती है ....

बालिकाएँ शीशे में मुँह देखती हैं ....

आदमी साबुन से नहाते हैं ....

इन लताओं का सौन्दर्य दर्शनीय है ....

तुम आज कहाँ थे ? ....

मैं आज बगीचे में था ....

इन वाक्यों को शुद्ध करो :—

एताः आभूषणानि धारयति ....

जनाः फेनिलेन स्नानं करोति ....

एतेषां लतानां सौन्दर्यं दर्शनीयः अस्ति ....

त्वम् अद्य कुत्र आसीत् ? ....

अस् धातु (पर०) के लोट् और लङ् के रूप लिखो :—

अस्तु	प्र०	आसीत् ....
....	म०	....
....	उ०	....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २६

शब्दावली—गोधूमः—गेहूँ, wheat, तण्डुलः—चावल, rice, चणकः—चना, gram, यवः—जौ, barley, धान्यम्—अनाज, grain, माषः-उड़द, a kind of pulse, वप्-बोना, to sow, पा-रक्षा करना, to protect, कृन्त्-काटना, to reap

नियम ५३—(सप्तमी) 'विषय में', 'बारे में' अर्थ में तथा समय-बोधक शब्दों में सप्तमी होती है। मम मोक्षे इच्छा अस्ति-मेरी मोक्ष के बारे में इच्छा है। त्वं प्रातःकाले अत्रागच्छः। त्वं शैशवे विद्यां पठ-तू बचपन में विद्या पढ़।

नियम ५४—श्चुत्व सन्धि) स् या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् को श् और तवर्ग को चवर्ग हो जाता है, अर्थात् त् को च्, द् को ज्, न् को ञ्। जैसे—(१) रामस् + च = रामश्च। (२) तत् + च = तच्च। सत् + चित् = सच्चित्। (३) सद् + जनः = सज्जनः। (४) याच् + ना = याच्ञा।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

अन्नैः एव शरीरं पुष्टं भवति। क्षेत्रेषु अन्नानि भवन्ति। गोधूमस्य चूर्णेन रोटिका भवन्ति। तण्डुलेभ्यः ओदनं भवति। यवेभ्यः सक्तुः भवति। वयं पक्वान् चणकान् खादामः। भोजने माषस्य सूपं भक्षयामः। कृषकः क्षेत्रे धान्यं वपति, कृन्तति च। ईशः लोकं पाति।

यत् शब्द (स्त्री०) के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

....प्र० ....तृ०

....ष० ....स०

संस्कृत बनाओ :—

अन्न से शरीर पुष्ट होता है ....

गेहूँ के आटे से रोटियाँ बनती हैं ....

पके चनों को बालक खाते हैं ....

जौ से सत्तू बनता है ....

चावलों से भात बनता है ....

मैंने भोजन में उड़द की दाल खायी ....

किसान अनाज को बोता है ....

किसान अनाज को काटता है ....

ईश्वर संसार की रक्षा करता है ....

राजा प्रजा की रक्षा करता है ....

मेरी धर्म के बारे में इच्छा है ....

बचपन में विद्या पढ़ो ....

रिक्त स्थानों को भरो :—

ईश्वरः संसारं .... । नृपः .... पातु ।

.... विद्यां पठ । कृषकः .... वपति ।

अन्नेन .... पुष्टं भवति । .... ओदनं भवति ।

कृषकः .... कृन्तति । वयं .... चणकान् खादामः ।

पा (२) धातु के लट् और लोट् के रूप लिखो :—

पाति .... प्र० पातु ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २७

शब्दावली—आम्रम्—आम, mango, दाडिमम्—अनार, pomegranate, कदलीफलम्—केला, banana, सेवफलम्—सेव, apple, नारङ्गफलम्—सन्तरा, orange, दृढबीजम्—अमरूद, guava, फलम्—फल, fruit, या—जाना, to go.

नियम ५५—(सप्तमी) एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होने पर पहली क्रिया में सप्तमी होती है। रामे वनं गते भरतः आगतः—राम के वन जाने पर भरत आए। रामे आगते सीता अपि आगता।

नियम ५६—(सप्तमी) प्रेम, आसक्ति और आदरसूचक शब्दों तथा धातुओं के साथ सप्तमी होती है। तस्य मयि स्नेहः अस्ति—उसका मुझपर स्नेह है। गुरोः क्षात्रेषु आदरः अस्ति। पिता पुत्रे स्निह्यति।

नियम ५७—(विसर्ग सन्धि) विसर्ग के बाद वर्ग का प्रथम, द्वितीय वर्ण या श ष स होग तो विसर्ग को स् हो जायगा। (बाद में श् या चवर्ग होगा तो उस स् को श् हो जायगा)। रामः + च = रामश्च। कः + चित् = कश्चित्। बालः तिष्ठति = बालस्तिष्ठति।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

फलानि मधुराणि भवन्ति। तानि स्वास्थ्यवर्धकानि सन्ति। भोजनान्ते फलानि सेवस्व। मह्यम् आम्रम्, दाडिमम्, कदलीफलम्, सेवफलम्, नारङ्गफलम्, दृढबीजं च रोचन्ते। यत्र इच्छसि तत्र याहि।

चतुर् शब्द (पुं०) के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

.... प्र० .... द्वि० .... तृ०

.... च० .... ष० .... स०

संस्कृत बनाओ :—

प्रतिदिन केले और सन्तरे खाओ ....

मुझे आम और सेव अच्छे लगते हैं ....

भोजन के बाद में फल खाओ ....

फल स्वास्थ्यवर्धक होते हैं ....

उसे अनार अच्छे लगते हैं ....

शिशु को अमरूद अच्छे लगते हैं ....

ये चारों फल मीठे हैं ....

चार बालकों को चार फल दो ....

चार छात्राओं को चार फूल दो ....

जहाँ जी करे, वहाँ जाओ ....

राम के वन जाने पर दशरथ मरे ....

गुरु शिष्य पर स्नेह करता है ....

कोष्ठ में दिए शब्दों में से उचित शब्द छाँट कर भरो :—

यत्र इच्छसि तत्र ....। (यात, याहि, यामि)

सः विद्यालयम् ....। (अयात्, अयाः, अयाम्)

अहं नगरम् ....। (अयाम् अयात्)

.......बालिकाभ्यः........ फलानि यच्छ। (चत्वारि, चतसृभ्यः)

या (२) धातु के लोट् और लङ् के रूप लिखो :—

यातु .... प्र० अयात् ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्क .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २८

शब्दावली—शय्या—बिस्तर, bed वृत्तिः आजीविका, profession, व्यापारः—व्यापार, trade, कृषिः—खेती, agriculture, खट्वा खाट, cot, पल्यङ्कः पलंग bed, शी—सोना, to sleep

नियम ५८—(सप्तमी) संलग्न और चतुर अर्थ वाले शब्दों के साथ सप्तमी होती है। स पठने लग्नः संलग्नः तत्परः वा अस्ति—वह पढाई में संलग्न है। कृष्णः साहित्ये निपुणः अस्ति—कृष्ण साहित्य में चतुर है।

नियम ५९—(सप्तमी) फेंकना अर्थ की धातुओं के साथ तथा विश्वास और श्रद्धा अर्थ वाली धातुओं और शब्दों के साथ सप्तमी होती है। रामः मृगे बाणं क्षिपति—राम मृग पर बाण फेंकता है। स धर्मे विश्वसिति—वह धर्म पर विश्वास करता है। तस्य धर्मे श्रद्धा अस्ति।

नियम ६०—(विसर्ग सन्धि) शब्द के अन्तिम विसर्ग को र् हो जाता है। विसर्ग से पहले अ या आ होगा तो यह नियम नहीं लगेगा। गुरुः + वदति = गुरुर्वदति। गुरुः + अवदत् = गुरुरवदत्। हरिः + इच्छति = हरिरिच्छति। शिशोः + वचनम् = शिशोर्वचनम्।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

अहम् अष्टम्यां कक्षायां पठामि। श्रीहरिदत्तशर्मा मम संस्कृताध्यापकः। मह्यं व्याकरणम् अतीव रोचते। मम पितुः कृषिकर्म वृत्तिः। अहं दशवादने विद्यालयम् आगच्छामि, सायं चतुर्वादने च गृहं गच्छामि। अहं धावनं क्रीडनं तरणम् अश्वारोहणं चेत्यादि व्यायामान् करोमि। रात्रौ दशवादने शय्यायां शये। आम्, मम पिता व्यापारं करोति। नहि, मम पिता व्यापारं न करोति, सः अध्यापनकार्यं करोति। आम्, अहं गुरोः वचनं पालयामि।

संस्कृत में उत्तर दो :—

त्वं कस्यां कक्षायां पठसि ?..

कः तव संस्कृताध्यापकः ? ....

किं त्वं संस्कृतानुवादे चतुरः असि ?..

किं तुभ्यं व्याकरणं रोचते ?..

तव किं नाम अस्ति ? ....

तव पितुः किं नाम अस्ति ?...

तव पितुः का वृत्तिः ? ....

कति वादने विद्यालयम् आगच्छसि ? ....

कति वादने गृहं गच्छसि ? ....

किं तुभ्यं व्यायामः रोचते ?..

त्वं कान् व्यायामान् करोषि ? ....

कति वादने शय्यायां शेषे ?..

किं तव पिता व्यापारं करोति ?...

किं तव पिता कृषिं करोति ? ....

किं तव पिता राजकीयां सेवां करोति ?..

तुभ्यं का वृत्तिः रोचते ?..

किं त्वं प्रतिदिनं क्रीडसि ?...

किं पठने तव मनः लगति ?...

किं त्वं सदा सत्यं वदसि ?...

किं मातुः पितुश्च आज्ञां पालयसि ?...

किं गुरोः वचनं पालयसि ? ....

दिनांक.................................हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

परिशिष्ट

(क) शब्दरूप-संग्रह

(१) गच्छत् (जाता हुआ)— पुंलिंग

गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः	प्र०
गच्छन्तम्	,,	गच्छतः	द्वि०
गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः	तृ०
गच्छते	,,	गच्छद्भ्यः	च०
गच्छतः	,,	,,	पं०
,,	गच्छतोः	गच्छताम्	ष०
गच्छति	,,	गच्छत्सु	स०
हे गच्छन्	हे गच्छन्तौ	हे गच्छन्तः	सं०

(२) करिन् (हाथी)— पुंलिंग

करी	करिणौ	करिणः	प्र०
करिणम्	,,	,,	द्वि०
करिणा	करिभ्याम्	करिभिः	तृ०
करिणे	,,	करिभ्यः	च०
करिणः	,,	,,	पं०
,,	करिणोः	करिणाम्	ष०
करिणि	,,	करिषु	स०
हे करिन्	हे करिणौ	हे करिणः	सं०

(३) पथिन् (मार्ग)— पुंलिंग

पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः	प्र०
पन्थानम्	,,	पथः	द्वि०
पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः	तृ०
पथे	,,	पथिभ्यः	च०
पथः	,,	,,	पं०
,,	पथोः	पथाम्	ष०
पथि	,,	पथिषु	स०
हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः	सं०

(४) दिश् (दिशा)— स्त्रीलिंग

दिक्-ग्	दिशौ	दिशः	प्र०
दिशम्	,,	,,	द्वि०
दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः	तृ०
दिशे	,,	दिग्भ्यः	च०
दिशः	,,	,,	पं०
,,	दिशोः	दिशाम	ष०
दिशि	,,	दिक्षु	स०
हे दिक्-ग्	हे दिशौ	हे दिशः	सं०

(५) क्षुध् (भूख)— स्त्रीलिंग

क्षुत्	क्षुधौ	क्षुधः	प्र०
क्षुधम्	,,	,,	द्वि०
क्षुधा	क्षुद्भ्याम्	क्षुद्भिः	तृ०
क्षुधे	,,	,,	च०
क्षुधः	,,	,,	पं०
,,	क्षुधोः	क्षुधाम्	ष०
क्षुधि	,,	क्षुत्सु	स०
हे क्षुत्	हे क्षुधौ	हे क्षुधः	सं०

(६) जगत् (संसार)— नपुं०

जगत्	जगती	जगन्ति	प्र०
,,	,,	,,	द्वि०
जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः	तृ०
जगते	,,	जगद्भ्यः	च०
जगतः	,,	,,	पं०
,,	जगतोः	जगताम्	ष०
जगति	,,	जगत्सु	स०
हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति	सं०

(७) **नामन् (नाम)**— नपुं०

नाम	नामनी	नामानि	प्र०
,,	,,	,,	द्वि०
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः	तृ०
नाम्ने	,,	नामभ्यः	च०
नाम्नः	,,	,,	पं०
,,	नाम्नोः	नाम्नाम्	ष०
नामनि	,,	नामसु	स०
हे नामन्	हे नामनी	हे नामानि	सं०

(८) **चतुर् (चार)** —

	पुं०	नपुं०	स्त्री०
प्र०	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वि०	चतुरः	,,	,,
तृ०	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
च०	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पं०	,,	,,	,,
ष०	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
स०	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

(९) **पञ्चन् (पाँच)**--तीनों लिंगों में प्रथमा आदि के क्रमशः रूप ये हैं :—

पञ्च, पञ्च, पञ्चभिः, पञ्चभ्यः, पञ्चभ्यः, पञ्चानाम्, पञ्चसु,

(१०) (क) **एतत् (यह)**-- पुंलिंग

एषः	एतौ	एते	प्र०
एतम्	,,	एतान्	द्वि०
एतेन	एताभ्याम्	एतैः	तृ०
एतस्मै	,,	एतेभ्यः	च०
एतस्मात्	,,	,,	पं०
एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	ष०
एतस्मिन्	,,	एतेषु	स०

(ख) एतत्—नपुं०

एतत्	एते	एतानि	प्र०
,,	,,	,,	द्वि०

शेष एतत् पुंलिंग के तुल्य ।

(ग) एतत्—स्त्रीलिंग

एषा	एते	एताः	प्र०
एताम्	,,	,,	द्वि०
एतया	एताभ्याम्	एताभिः	तृ०
एतस्यै	,,	एताभ्यः	च०
एतस्याः	,,	,,	पं०
,,	एतयोः	एतासाम्	ष०
एतस्याम्	,,	एतासु	स०

(११) (क) **यत् (जो)**-- पुंलिंग

प्र०	यः	यौ	ये
द्वि०	यम्	,,	यान्
तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
च०	यस्मै	,,	येभ्यः
पं०	यस्मात्	,,	,,
ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
स०	यस्मिन्	,,	येषु

(ख) यत्—नपुं०

प्र०	यत्	ये	यानि
द्वि०	,,	,,	,,

शेष यत् पुंलिंग के तुल्य ।

(ग) यत्—स्त्रीलिंग

प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	,,	,,
तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
च०	यस्यै	,,	याभ्यः
पं०	यस्याः	,,	,,
ष०	,,	ययोः	यासाम्
स०	यस्याम्	,,	यासु

(ख) धातुरूप-संग्रह

सूचना—इन चारों धातुओं के रूप भू के तुल्य चलेंगे। कथ् और भक्ष् में अय जोड़कर रूप चलेंगे। यहाँ लट् आदि के प्र० पु० एक० के रूप दिए गए हैं।

	(१) स्था (रुकना),	(२) दृश् (देखना),	(३) कथ् (क१ना),	(४) भक्ष् (खाना)
लट्	तिष्ठति	पश्यति	कथयति	भक्षयति
लोट्	तिष्ठतु	पश्यतु	कथयतु	भक्षयतु
लङ्	अतिष्ठत्	अपश्यत्	अकथयत्	अभक्षयत्
वि० लिङ्	तिष्ठेत्	पश्येत्	कथयेत्	भक्षयेत्
लृट्	स्थास्यति	द्रक्ष्यति	कथयिष्यति	भक्षयिष्यति

(५) सेव् (सेवा करना)—आत्मनेपदी   **(६) शी (सोना)**—आत्मने०

	लट्				लट्	
सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र० पु०	शेते	शयाते	शेरते
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म० पु०	शेषे	शयाथे	शेध्वे
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ० पु०	शये	शेवहे	शेमहे
	लोट्				लोट्	
सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र०	शेताम्	शयाथान्	शेरताम्
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ०	शयै	शयावहै	शयामहै
	लङ्				लङ्	
असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
सेवेते	सेवेयाताम्	सेवेरन्	प्र०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्	म०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि	उ०	फयीय	शयीवहि	शयीमहि
	लृट्				लृट्	
सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म०	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
सेवविये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ०	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे